ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.421

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023|

महाभारत में राजधर्म

Sita Gahlot

Associate Professor, Dept. of Sanskrit, Govt. College, Bundi, Rajasthan, India

सार

आज जिसे हम "राजनीति" कहते हैं, उसी की प्राचीन शब्दों में "राजधर्म" संज्ञा थी। महाभारत राजधर्म के तथ्यों से भरा पड़ा है। लेकिन शान्तिपर्व में **"राजधर्म"** का विशेष रूप से निरूपण हुआ है। इसके अतिरिक्त प्रायः पूरे महाभारत में प्रसङ्गानुकूल राजधर्म की बातें कही गयी हैं। लेकिन शान्ति पर्व में विवेचना करने से पता चलता है कि इसमें राजा का स्वरूप और राजा की आवश्यकता, राजाविहीन समाज की दशा, राजा द्वारा राज्य की व्यवस्था और प्रजापालन आदि राजधर्म के मुख्य विवेचना के विषय हैं। महाभारत में राजा और राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में संकेत मिलता है। युधिष्ठिर के प्रश्न के उत्तर में भीष्म ने बताया कि सतयुग में राजा और राज्य नहीं हुआ करते थे। स्वतः ही धर्म के भय से प्रजा अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करती थी। इस प्रकार उस समय धर्मानुशासन था। समय बीतने पर लोगों में लोभ और मोह व्याप्त हो गया। समय को अनियन्त्रित देखकर देवताओं के आग्रह पर ब्रह्मा ने अपनी बुद्धि से एक लाख अध्यायों का एक ऐसा नीति शास्त्र रचा जिसमें धर्म अर्थ और काम का विस्तारपूर्वक वर्णन है। जिनमें इन वर्गों का वर्णन है वह प्रकरण त्रिवर्ग नाम से विख्यात है-

ततोऽध्यायसहस्राणां शतं चक्रे स्वबुद्धिजम्।
यत्रधर्मस्तथैवार्थः कामष्चैवाभिवर्णितः॥
त्रिवर्ग इति विख्यातो गण एव स्वयम्भुवा।
शा0प0 59/29

परिचय

"राजते इति राजा" जो लोगों के बीच दीप्तिमान होता है सुशोभित होता है, वह राजा है। प्राचीन मान्यता के अनुसार राजा में ईश्वर का अंश होता है। विष्णु, इन्द्र, वरुण आदि देवताओं की उत्पत्ति जिन उपादानों से हुई उन्हीं उपादानों से राजा की भी उत्पत्ति होती है। इसीलिए राजा सबसे तेजस्वी और प्रखर बुद्धि वाला होता है। महाभारत (भीष्मपर्व 34/27) में श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है कि-**"नराणां च नराधिपः"**अर्थात् मनुष्य जाति में राजा तो मैं ही हूँ। अभिप्राय यह हुआ कि राजा मनुष्य जाति में से ही होता है बस उस पर ईश्वर की छाप होती है।[1]

समाज विभिन्न प्रकार की विपत्तियों और बाधाओं से व्याप्त था। अतः समाज को संचालित करने के लिए एक मज़बूत व्यवस्था की आवश्यकता थी जिससे अराजक जनता पर नियन्त्रण रखा जा सके। जैसा कि उल्लेख मिलता है कि राजा और नीतिशास्त्र से पहले सतयुग का काल था और धर्मानुशासन से ही सामाजिक व्यवस्थाएँ स्वतः चल रही थी। लेकिन धर्मानुशासन के कमज़ोर पड़ने पर राजधर्म और राजा का उदय हुआ। जैसा कि उल्लेख मिलता है-

प्राचीन काल में राजा का चयन प्रजा मिलकर करती थी। समय व्यतीत होने पर राजपद वंशपरम्परागत हो गया और राजा के उत्तराधिकारी को ही राज्य प्राप्त होने लगा।[2] इसी प्रकार महाभारत में भी देखने को मिलता है कि युधिष्ठिर प्रजा के अत्यधिक चाहने पर भी राजा नहीं बन सके और दुर्योधन उत्तराधिकारी के रूप में राजा बन गया। युधिष्ठिर सदाचारी और योग्य होने पर भी राजपद से वंचित् रह गये और दुर्योधन दुराचारी और अयोग्य राजा बन गया। लेकिन दुर्योधन अपना राजपद सुरक्षित रखने के लिए नीति से राज्य को जीतने का प्रयत्न करने लगा। लेकिन युधिष्ठिर ने न्याय और धर्मपूर्वक युद्ध करके अपना अधिकार प्राप्त कर लिया।

शान्तिपर्व में राजधर्म का महत्त्व उसकी श्रेष्ठता और राजा के आदर्श चरित्र पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। सभी वर्णाश्रम और धर्मों का पालन करने और पुरुषार्थ चतुष्टय का हेतु होने से राजधर्म सभी धर्मों का मूल कहा गया है।[3] राजधर्म की उपेक्षा कर कोई भी धर्म उन्नति के शिखर को प्राप्त नहीं कर सकता। राजधर्म बाहुबल के अधीन होता है। वह क्षत्रियों के लिए जगत् का श्रेष्ठतम धर्म है, उसका सेवन करने वाले क्षत्रिय मानवमात्र की रक्षा करते हैं। अतः तीनों धर्मों के उपधर्मों सहित जो अन्यान्य समस्त धर्म हैं। वे राजधर्म से ही सुरक्षित रह सकते हैं, यह मैंने वेदशास्त्र से सुना है।[1] जैसे हाथी के पदचिह्न में सभी प्राणियों के पदचिह्न विलीन हो जाते हैं उसी प्रकार सब धर्मों को सभी अवस्थाओं में राजधर्म के भीतर ही समाविष्ठ हुआ समझो।[2] सभी धर्मों में राजधर्म प्रधान है, क्योंकि उसके द्वारा सभी वर्णों का पालन होता है। राजन्! सभी धर्मों में सभी प्रकार के त्याग का समावेश है और ऋषिगण त्याग को सर्वश्रेष्ठ एवं प्राचीन धर्म बताते हैं।[3]

महाभारत के शांति पर्व में राजधर्मानुशासन का एक उपपर्व है। भारत में जब जब 'राजधर्म' की चर्चा होती है तब तब महाभारत के शांति पर्व का उल्लेख किया जाता है।शांति पर्व की पार्श्वभूमि इस तरह हैः महाभारत युद्ध समाप्त हो चुका है। कुरुक्षेत्र में भीष्म

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023|

पितामह शरपंजर पर पड़े हैं। पांडवों की विजय हुई है। सभी कौरव मारे गए हैं।[4] युधिष्ठिर अपने भाइयों, रिश्तेदारों, गुरू के संहार पर अत्यंत दुःखी हैं। उनके मन में वैराग्य निर्माण हुआ है। वे राज संन्यास लेने की बात कर रहे हैं। उन्हें समझाने का काम (अर्थात रास्ते पर लाने का काम) श्रीकृष्ण और महर्षि व्यास कर रहे हैं, लेकिन उसका कोई उपयोग नहीं हो रहा है। अंत में श्रीकृष्ण शरपंजर पर पड़े भीष्म के पास युधिष्ठिर को ले जाते हैं। भीष्म पितामह युधिष्ठिर को राजधर्म का उपदेश देते हैं। यह उपदेश केवल युधिष्ठिर के लिए नहीं; अपितु विश्व के सभी राजकर्ताओं के लिए है।[5]

यथा राजन् हस्तिपदे पदानि
संलीयन्ते सर्वसत्त्वोदभवानि।
एवं धर्मान् राजधर्मेषु सर्वान्
सर्वावस्थान् सम्प्रलीनान् निबोध ॥25॥

(नरेश्वर! जैसे हाथी के पदचिह्न में सभी प्राणियों के पदचिह्न विलीन जाते हैं, उसी प्रकार सब धर्मों को सभी अवस्थाओं में राजधर्म के भीतर ही समाविष्ट हुआ समझो।)

विचार-विमर्श

समाज में सुव्यवस्था की दृष्टि से क्षत्रियधर्म अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उसका यथोचित पालन करने से क्षत्रिय इहलोक में अक्षय यश और परलोक में अनन्त सुख प्राप्त करता है। समुचित प्रजापालन से ही राजा मोक्ष का अधिकारी हो जाता है।[4] वस्तुतः राजा वही है जिसके राज्य में प्रजा सुखपूर्वक जीवन-यापन करें। प्रजा को सुखी और सन्तुष्ट रखने वाले राजा का यश चिरकाल तक चलने वाला और स्थायी होता है।[5]बृहस्पति ने राजाओं के लिए उद्योग के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। उद्योग ही राजधर्म का मूल है। देवराज इन्द्र ने उद्योग से ही अमृत प्राप्त किया उद्योग से ही असुरों का संहार किया और उद्योग से ही देवलोक और इलहोक में श्रेष्ठता प्राप्त की।[6] राजा के लिए जो गोपनीय रहस्य की बात हो, शत्रुओं पर विजय पाने के लिए वह जो लोगों का संग्रह करता हो, विजय के ही उद्देश्य से उसके हृदय में जो कार्य छिपा हो अथवा जो न करने योग्य असत् कार्य हो, वह सब कुछ उसे सरल स्वभाव से ही छिपाये रखना चाहिए। वह लोगों में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए सदा धार्मिक कर्मों का अनुष्ठान करे जिसका उल्लेख इस प्रकार मिलता है-

राज्ञो रहस्यं यद् वाक्यं जयार्थं लोकसंग्रहः।
हदि यच्चास्य जिह्मं स्यात् कारणेन च यद् भवेत्॥
यच्चास्य कार्यं वृजिनमार्जवेनैव धारयेत्।
दम्भनार्थं च लोकस्य धर्मिष्ठामाचरेत् क्रियाम्॥
शा0पा0, 58/19-20

प्रजा की रक्षा करते हुए, राजा के प्राण चले जाएँ तो भी वह उसके लिए महान् धर्म है।[7] प्रजा में भेदभाव की दृष्टि नहीं रखनी चाहिए। राजा को दुष्ट-दमन और शिष्ट-पालन में अनुरक्त होना चाहिए। राजा को चाहिए कि वह अपराध के अनुसार ही अपराधी को कठोर दण्ड दे। किसी भी दुष्ट को क्षमा न करे। यदि प्रजा के धर्म का भागी राजा होता है तो वह प्रजा के पाप का भी भागी होता है।[6] अतः सर्वात्मना प्रयत्न यह करना चाहिए कि उसके राज्य में पाप का अङ्कुर भी दिखाई न दे।[8] राजा ही सत्ययुग की सृष्टि करने वाला होता है, और राजा ही त्रेता, द्वापर तथा चौथे युग कलि की भी सृष्टि का कारण है।[9] इसलिए धर्मपालन में राजा को सदैव सतर्क दृष्टि वाला होना चाहिए, क्योंकि राजा ही समय का शुभा-शुभ हेतु होता है। राजा के द्वारा सुरक्षित हुई प्रजाएँ जो-जो धर्म करेगी, उसका चतुर्थ भाग आपको मिलता रहेगा।[10] राजा को यदि राजलक्ष्मी का उपभोग चिरकाल तक करना है तो ऐसा आचरण करना चाहिए जिससे दर्प और अधर्म का सेवन न हो। मतवाले प्रमादी बालकों से दूर रहो।[7] यदि वे निकट आकर सेवा करना चाहें तो भी उनकी उस सेवा से भी सर्वथा वचना चाहिए। निग्रहीत अमात्य, अपरिचित स्त्री, ऊँचे-नीचे दुर्गम पर्वतों से तथा हाथी, घोड़े और सर्पों से राजा को सुरक्षित रहना चाहिए रात्रि विचरण, कृपणता, अभिमान, दम्भ और क्रोध का भी सर्वथा परित्याग कर दें।[11]

राजा के विधायीराज्यकार्य में कितने सदस्य होने चाहिए इस विषय में महाभारत में कोई एक निश्चित मत नहीं व्यक्त किया गया है।[8] भिन्न-भिन्न स्थलों पर मन्त्रियों की संख्या अलग-अलग बताई गई है। मन्त्रियों की न्यूनतम संख्या तीन होनी चाहिए।[12] एक स्थल पर कहा गया है कि राजा पाँच बुद्धिमान मन्त्रियों के परामर्श से कार्य करें।[13]

अल्पाश्रयानल्पफलान् वृदन्ति
धर्मानन्यान् धर्मविदोे मनुष्याः।
महाश्रयं बहुकल्याणरूपं
क्षात्रं धर्म नेतरं प्राहुरार्याः ॥26॥

(धर्म के ज्ञाता आर्य पुरुषों का कथन है कि अन्य समस्त धर्मों का आश्रय तो अल्प ही है, फल भी अल्प ही है। परंतु क्षात्र धर्म का आश्रय भी महान है और उसके फल भी बहुसंख्यक एवं परमकल्याणरूप हैं, अतः इसके समान दूसरा कोई धर्म नहीं है।)[9]

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023|

सर्वे धर्मा राजधर्मप्रधानाः
सर्वे वर्णाः पाल्यमाना भवन्ति।
सर्वस्त्यागो राजधर्मेषु राजं-
स्त्यागं धर्मं चाहुरग्र्यं पुराणम् ॥27॥

(सभी धर्मों में राजधर्म ही प्रधान है; क्योंकि उसके द्वारा सभी वर्णों का पालन होता है। राजन्! राजधर्मों में सभी प्रकार के त्याग का समावेश है और ऋषिगण त्याग को सर्वश्रेष्ठ एवं प्राचीन धर्म बताते हैं।)[10]

मज्जेत् त्रयी दण्डनीतौ हत्यायां
सर्वे धर्माः प्रक्षयेयुर्विबुद्धाः।
सर्वे धर्माश्चाश्रमाणां हतः स्युः
क्षात्रे त्यक्ते राजधर्मे पुराणे ॥28॥

(यदि दण्डनीति नष्ट हो जाय तो तीनों वेद रसातल को चले जाय और वेदों के नष्ट होने से समाज में प्रचलित हुए सारे धर्मों का नाश हो जाय। पुरातन राजधर्म जिसे क्षात्र धर्म भी कहते हैं, यदि लुप्त हो जाय तो आश्रमों के सम्पूर्ण धर्मों का ही लोप हो जायेगा)[11]
प्रजापालन करना राजा का प्राथमिक कर्तव्य है। यदि वह ऐसा न करें तो क्या होता है इसे भीष्म पितामह इन शब्दों में व्यक्त करते हैं-

यदि राजा प्रजा की रक्षा न करे तो बलवान मनुष्य दुर्बलों की बहु-बेटियों को हर ले जायं और अपने घरबार की रक्षा के लिए प्रयत्न करने वालों को मार डालें। ॥14॥यदि राजा रक्षा न करे, तो इस जगत् में स्त्री, पुत्र, धन अथवा घरबार कोई भी ऐसा संग्रह सम्भव नहीं हो सकता, जिसके लिए कोई कह सके कि यह मेरा है, सब ओर सब की सारी सम्पत्ति का लोप हो जाय। ॥15॥यदि राजा प्रजा का पालन न करे तो पापचारी लुटेरे सहसा आक्रमण करके वाहन, वस्त्र, आभूषण और नाना प्रकार के रत्न लूट ले जायं। ॥16॥यदि राजा रक्षा न करे तो धर्मात्मा पुरुषों पर बारंबार नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों की मार पड़े और विवश होकर लोगों को अधर्म का मार्ग ग्रहण करना पड़े।[12] ॥17॥यदि राजा रक्षा न करे तो धनवानों को प्रतिदिन वध या बन्धन का क्लेश उठाना पड़े और किसी भी वस्तु को वे अपनी न कह सकें। ॥19॥
युधिष्ठिर! तुम माली के समान बनो, कोयला बनाने वाले के समान न बनो (माली वृक्ष की जड़ को सींचता और उसकी रक्षा करता है, तब उससे फल और फूल ग्रहण करता है, परंतु कोयला बनाने वाला वृक्ष को समूल नष्ट कर देता है; उसी प्रकार तुम भी माली बनकर राज्यरूपी उद्यान को सींच कर सुरक्षित रखो और फल-फूल की तरह प्रजा से न्यायोचित कर लेते रहना, कोयला बनाने वाले की तरह सारे राज्य को जलाकर भस्म न करो), ऐसा करके प्रजा पालन में तत्पर रहकर तुम दीर्घकाल तक राज्य का उपभोग कर सकोगे। ॥20॥भीषाचार्य का यह उपदेश बहुत महत्वपूर्ण है। यह मात्र वैचारिक उपदेश नहीं; बल्कि उन्होंने कई उदाहरणों से इसे स्पष्ट किया है। [13]यह सारा उपदेश गहराई से पढ़ने पर दो-तीन बातें ध्यान में आती हैं। पहली बात यह कि यह सारा उपदेश क्षत्रिय वर्ण के लिए है अर्थात क्षत्रिय लोगों के लिए है। दूसरी बात यह कि यह उपदेश राजा के लिए है। राजा वंश परम्परा से गद्दी पर आता है। तीसरी बात यह कि राजधर्म का अर्थ ही है क्षत्रिय धर्म।यह सारा उपदेश पढ़ने पर मेरे मन में प्रश्न उपस्थित हुआ। मानिए कि शरपंजर पर पड़े भीष्म आज भी जीवित हों और उनके पास क्षात्र धर्म का उपदेश लेने के लिए आज का जनमान्य नेता, जो कल प्रधान मंत्री होने की संभावना है, यदि गया तो भीष्माचार्य उन्हें कौनसा उपदेश देंगे? यह निश्चित है कि धर्मराज को दिया गया सारा का सारा उपदेश उन्हें नहीं देंगे, लेकिन राजधर्म के शाश्वत तत्व उन्हें अवश्य बताएंगे। समय बदल गया है इसलिए मुझे लगता है कि थोड़ा-सा अलग उपदेश देंगे। यह कैसा होगा इसकी कल्पना की तो निम्न दृश्य मेरे समक्ष उपस्थित हुआ-

भीष्म उनसे कहेंगे, "हे पुत्र! हाथी के पदचिह्न में जिस तरह सभी प्राणियों के पदचिह्न समा जाते हैं उसी तरह एकलौते राजधर्म में अन्य सभी धर्म आ जाते हैं। इसलिए तू राजधर्म को ठीक से समझ लें और उसका अनुपालन कर।"समय बदल गया है। मेरे समय में, महाभारत काल में केवल क्षत्रिय वर्ण के लोगों को ही राज्य चलाने का अधिकार था। [14]अब वैसी स्थिति नहीं रही है। अब राजा नहीं रहे, राजघराने खत्म हो गए, उसके बदले जनप्रतिनिधियों का राज्य आ गया। राज्य किसके हाथ में हो यह तय करने का अधिकार अब लोगों के हाथ में है। इसलिए मेरे समय का वर्णाश्रम धर्म अब कालबाह्य हो चुका है। मेरे समय में क्षात्रधर्म ही राजधर्म था। अब वैसी स्थिति नहीं रही।अब राज्यकर्ता जमात के अर्थ में क्षात्रधर्म का विचार करना हो तो पूरी प्रजा का विचार करना होगा। आज की परिभाषा में राजधर्म का अर्थ सरकार के चयन करने वाली प्रजा का राजधर्म कौनसा, इसे समझना पड़ेगा।भीष्म पितामह आगे कहेंगे, "सम्पूर्ण प्रजा को यह स्मरण दिलाना होगा कि वह राजा हो गई है। महाभारत काल में सभी जिम्मेदारियां राजा पर डाल कर मुक्त हो सकते थे। उस समय यह कहावत भी थी कि 'यथा राजा तथा प्रजा।' अब स्थिति विपरीत हो गई है। जैसी प्रजा वैसी उसकी सरकार होती है। इसलिए हे पुत्र! तू प्रजा को शिक्षित कर। प्रजा भ्रष्ट हो तो राज्य भ्रष्ट ही होगा। प्रजा शराबी हो तो राज्य भी शराबी होगा। प्रजा उपभोग के पीछे पड़ी हो तो सरकार भी वैसी ही होगी। इसलिए लोगों को संयम सिखाना होगा। हम ही हमारे जीवन के शिल्पकार हैं यह बात उनके मन में बसानी होगी।[15]"

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023|

परिणाम

प्राचीन राजधर्म और राज्य-व्यवस्था की समीक्षा करने पर एक तथ्य निष्कर्षतः प्राप्त होता है कि तेजस्वी तपः पूत, ब्राह्मण की ब्रह्म शक्ति तथा प्रजापालन क्षत्रिय का बाहुबल-इन दोनों की अभेद मैत्री होने पर ही राज्य का कल्याण और अभ्युन्नति हो सकती है, अन्यथा नहीं।[14] दूतविद्या के विषय में वर्णन मिलता है कि राजाके दूत को कुलीन होना चाहिए, शीलवान, वाचाल, चतुर, प्रिय वचन बोलने वाला, संदेश को ज्यों का त्यों कह देने वाला तथा स्मरण शक्ति से सम्पन्न इन सात गुणों से युक्त होना चाहिए। द्वारपाल में भी ये ही गुण होने चाहिए। राजा के शिरोरक्षक में भी इन्हीं गुणों का समावेश होना चाहिए। मन्त्री के विषय में वर्णन मिलता है कि संधि विग्रह के अवसर को जानने वाला धर्मशास्त्र का ज्ञाता, बुद्धिमान, धीर, लज्जावान, रहस्य को गुप्त रखने वाला कुलीन साहसी तथा शुद्ध हृदय वाला मन्त्री ही उत्तम माना जाता है। सेनापति भी इन्हीं गुणों से सम्पन्न होना चाहिए।[15]

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से पता चलता है कि महाभारत के शान्तिपर्व में "राजधर्म अथवा राजनीति के विषय में विस्तृत रूप से वर्णन मिलता है जिनके मुख्य बिन्दुओं पर यहाँ प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।[10]
भीष्माचार्य कहेंगे, "यह काम सरल नहीं है। लोगों की प्रवृत्तियां सहज मिलने वाले सुख की ओर दौड़ने की होती हैं। कम श्रम में अधिक पैसा पाने के मार्ग खोजने के पीछे सामान्य लोग होते हैं। इसलिए उन्हें आलसी बनाकर मुफ्त में खिलाने के आश्वासन के पीछे लोग पागलों की तरह भागते हैं। हमारे भारत में ही मुफ्त टीवी, मुफ्त लैपटॉप, मुफ्त मोबाइल, मुफ्त अनाज वितरण करने वाले उपक्रमों के पीछे लोग पागलों की तरह चले जाते हैं। हे पुत्र! यह मार्ग केवल अधोगति की ओर ले जाने वाला ही नहीं, अधार्मिक भी है। धर्म व्यक्ति को उद्योगी बनने के लिए कहता है, पराक्रम करने के लिए कहता है, परिश्रम करने के लिए कहता है, प्रचंड उद्योग कर सम्पत्ति जुटाने के लिए कहता है। मुफ्त खाने की प्रवृत्ति समाज को आलसी बनाती है, निरुद्योगी बनाती है,[11] गुलाम बनाती है। ऐसा समाज पराक्रम नहीं कर सकता, तेजस्वी नहीं बन सकता। इसलिए यह पाप तू मत करना। जिन्होंने ये पाप किए हैं, उन्हें उनके कर्म के फल भोगने होंगे। क्योंकि 'जैसा कर्म करें वैसा भोगें' यह कर्मफल का शाश्वत सिद्धांत है।हे पुत्र! मुझे दिखाई देता है कि भारत की प्रजा को वास्तव में राजा बन जाने का बोध उतना नहीं हुआ है। बहुसंख्य लोग अपने वोट का मूल्य नहीं समझते। खाते-पीते सुखी लोग मतदान के लिए बाहर ही नहीं निकलते। जो गरीब हैं वे मतदान करते हैं। उनके वोट खरीदने का सौदा होता है। आज के युग का राजधर्म मतदान करना है और यह राजधर्म होने से धर्म के किसी काम में भ्रष्टाचार नहीं चल सकता।[12] धर्म के काम में भ्रष्टाचार करना अधर्म है। इसलिए प्रजा को धार्मिक बनने के लिए अर्थात मतदान के धर्म का पालन करने के लिए बार-बार कहना होगा। धर्म न्यायनीति सिखाता है, क्या अच्छा है, क्या बुरा है इसका निर्णय करने की शिक्षा देता है। इसलिए प्रजा को क्या अच्छा है और क्या बुरा है यह बताना होगा।[13]

भीष्म पितामहः पुत्र! यह सनातन दोष है। धर्म क्या है, अधर्म क्या है यह हरेक को पता होता है, लेकिन समझ नहीं रखते। दुर्योधन ने नहीं कहा था कि धर्म क्या है यह मैं जानता हूं; लेकिन धर्म के प्रति मेरी प्रवृत्ति नहीं है, उसका मैं क्या करूं? सौभाग्य से समाज के सभी लोग दुर्योधन नहीं होते। प्रभुतासम्पन्न प्रजा द्वारा धर्म पर चलना कठिन मार्ग पर चलने जैसा है। यह कठिन है, लेकिन करना आवश्यक है। प्रजा को अपने राज्यकर्ता चुनने हैं। राज्यकर्ता का चयन करते समय उसे राजनीति की कितनी समझ है, आधुनिक राज्य की जटिल समस्याओं का उसे कितना ज्ञान है, उसका चरित्र कैसा है, वह अपराधी प्रवृत्ति का तो नहीं- इन बातों पर गौर करने के लिए उसे शिक्षित करना चाहिए। निरंतर जागरूकता सुशासन की गारंटी है। इसलिए लोकशिक्षण का कोई विकल्प नहीं है।[14] पहले इसकी बहुत आवश्यकता नहीं थी। राजघराने का कोई राज करने वाला है और वह भगवान का अंश है यह भावना थी। अब हम ही जनता जनार्दन हैं इस बात का सामान्य प्रजा को बोध होना चाहिए। गलतियां अज्ञान के कारण होती हैं और अज्ञान सारे संकटों की जननी होती है। अतः ज्ञान का कोई विकल्प नहीं है। यह ज्ञान है हम प्रभुतासम्पन्न हैं और हमें सुशासन निर्माण करना है। आप लोगों ने धर्म का बड़ा गलत अर्थ किया है। अलग-अलग उपासना पंथों को आप धर्म कहते हैं और इन उपासना पंथों के आधार पर आप लोगों की भावनाएं भड़काते हैं, उन्हें अंधे बनाते हैं तथा उन्हें उनके मूलभूत कर्तव्य का विस्मरण करवाते हैं। यह सब अधर्म है। वही-वही गलतियां लोग न करें इसकी जिम्मेदारी समाज के सभी सयाने वर्गों पर है। जो धर्म अर्थात कर्तव्य के आचरण समझते हैं उन्हें अपना कर्तव्य बेहतर तरीके से पूरा करना चाहिए और सामान्य लोगों को उनके कर्तव्यों का पालन करने के लिए मदद करनी चाहिए। मेरे महाभारत काल में अधर्म क्यों बढ़ा? उसका उत्तर यह है कि धर्माचरण करने वाले शांत बैठे थे, वे अधर्म को देखते रहे, उसका विरोध नहीं किया। अधर्म को मूक सम्मति देना भी अधर्म ही है, चाहे वह धार्मिक लोगों द्वारा किया गया ही क्यों न हो। ऐसा न होने दें। धर्म अर्थात अपने कर्तव्य के आचरण के लिए तू धर्माग्नि प्रज्ज्वलित कर।[15]

निष्कर्ष

भीष्म पितामहः पहले राजशाही के जमाने में युवराज को बचपन से ही शिक्षित किया जाता था। उसे राज्यशास्त्र, युद्धशास्त्र, व्यवहार शास्त्र, अर्थशास्त्र, विदेश नीति की शिक्षा दी जाती थी। अब राजशाही चली गई, युवराज पद भी चला गया। इसलिए इन सभी विषयों का अध्ययन स्वयं ही करना होगा। अज्ञानी बनकर राजकाज न करें। राज चलाना परचून की दुकान चलाने जैसा नहीं है। वैसे तो परचून की दुकान चलाना भी कठिन होता है। लोगों को ऐसा लगना चाहिए कि उनका नेता राजकाज में कुशल है, अर्थशास्त्र में

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023|

उसकी गति है। अर्थशास्त्र का किताबी ज्ञान किसी काम का नहीं होता। उसका उपयोग नोबेल पुरस्कार पाने के लिए होता है। पुत्र! मेरे इस भारत खंड में 30 करोड़ लोग भूखे सोते हैं, शरपंजर के तीरों से मुझे जितनी वेदना नहीं हुई उससे ज्यादा वेदना इन भूखे जीवों की है। इस मेरे भारत खंड में डेढ़ करोड़ बच्चे कुपोषण से मरते हैं। तुम्हारा अर्थशास्त्र उनकी भूख शांत करने में समर्थ होना चाहिए।[11]

लोगों को भरमाना बहुत सरल होता है रे! मेरे महाभारत काल में जातियां थीं और वे धीरे-धीरे भेदों में रूपांतरित हो रही थीं। अब कलियुग में मजबूत हो गईं। तू जाति-भावना उभाड़कर एकगट्ठा वोट पाने का उपक्रम न करना, उससे इस सनातन समाज में अधर्म का राज्य निर्माण होगा। तू धर्म रक्षण के लिए खड़ा होना! इन सभी को याद दिला दें कि हम सभी आर्य हैं। आर्य याने श्रेष्ठ मानव हैं। हम सभी भारत माता की संतान हैं, कोई ऊंच-नीच नहीं, ज्ञान का अधिकार सभी को है। उपासना की स्वतंत्रता सभी को है। आजीविका के मार्ग का चयन करने का अधिकार सभी को है।[13]

पुत्र! मेरे समय में पांचाल, कुरू, मगध, वैशाली, कंबोज इत्यादि प्रदेश थे। उन प्रदेशों में रहने वाले लोगों को उन प्रदेशों के नाम से जाना जाता था। लेकिन, अब मैं देख रहा हूं कि हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, जैन, पारसी, बौद्ध इस तरह टुकड़ों-टुकड़ों में विचार किया जाता है। मेरे समय में यह भावना नहीं थी। उस समय यह भावना थी कि हम जम्बूद्वीप के निवासी हैं, भारतवर्षीय हैं। प्रजा में पहले भेद पैदा करना और फिर उन्हें एक होने का उपदेश करना। यह तो ऐसा हुआ कि पहले मकानों में आग लगाना और फिर उसे बुझाने के लिए प्रयास करना। तू ऐसे काम मत करना। सारी मानव-जाति एक ही चैतन्य का आविष्कार है यही भाव मन में रखना और सभी के प्रति समत्वबुद्धि से देखना। जहां समत्व है वहां ऐक्यत्व अपने-आप निर्माण हो जाता है।भीष्म पितामहः सब से पहले यह ध्यान में रख कि देश चलाने जैसा बड़ा और कठिन कार्य एक व्यक्ति नहीं कर सकता। जैसे-जैसे ऊपर चढ़े वैसे-वैसे मन बड़ा करना होता है। सृष्टि का नियम है कि जैसे जैसे ऊपर जायें वैसे वैसे हवा विरल होती है और कान हलके होते हैं। तुम्हारे कान हलके न होने देना। सोपान की एक-एक सीढ़ियां चढ़कर ही सोपान के अंतिम सिरे तक पहुंचा जा सकता है। लेकिन ध्यान में रखना होता है कि उसी सोपान से फिर कभी न कभी नीचे आना होता है। इसलिए सोपान की सीढ़ियां मजबूत रहे इसका ध्यान रखना। उन्हें तोड़ देने का अविचार न करना। जीवन में एक बार ही शिखर पर जा सकते हैं। एवरेस्ट शिखर पर सदा के लिए नहीं रहा जा सकता। इस शाश्वत सत्य का स्मरण रखना।[12]

यश मिलते ही स्वार्थी, बेईमान लोगों और चाटुकारों का घेरा बढ़ने लगता है। हितकारी सलाह देने वाले दूर जाने लगते हैं। पसंदीदा सलाह देने वाले करीब आते हैं। दुर्योधन को हितकारी सलाह देने वाला मैं, विदुर, श्रीकृष्ण थे, लेकिन उसके आसपास कर्ण, शकुनी, दुष्यासन और उनके मित्र मंडलियों का घेरा होता था। सुनने में सुखदायी लेकिन अनिष्ट परिणाम दिलाने वाले बहुत मिलते हैं। लेकिन सुनने में अप्रिय किंतु परिणामी हितवर्धक सलाह देने वाले अत्यंत कम होते हैं। तू उन्हें खोज, उनसे दोस्ती रख। जिनका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं है ऐसे लोगों को ही पास आने दें और उनकी बात सुनने की मन को आदत डाल।भीष्म पितामहः पुत्र! पहले की राजव्यवस्था अनेक बार अनियंत्रित होती थी। सभी राजा सार्वभौम राजधर्म का पालन नहीं करते थे, वे अनाचार करते थे। कंस, जरासंध, दुर्योधन ये कुछ उदाहरण हैं। प्रजातंत्र में राजसत्ता पर प्रजा का नियंत्रण होता है। नियंत्रण रखने वाली विविध संस्थाएं होती हैं। आज के युगधर्म के अनुसार तू प्रजातंत्रधर्मी हो। प्रजातंत्र के सभी अंग बलवान, कार्यक्षम और प्रामाणिक किस तरह हो इसका ध्यान रखना। उनके अच्छे कार्य पर ही प्रजातंत्र का भविष्य निर्भर है। प्रजातंत्र के अंग ढह जाए तो भारत वर्ष में, जम्बूद्वीप में अराजकता पैदा होगी अथवा उसका पाकिस्तान होगा।[14]

राज्यकर्ता को निर्णय करने होते हैं, कठोर निर्णय करने होते हैं, वे तेजी से लेने होते हैं लेकिन इस बात को न भूलना कि प्रजातंत्र अगर ठीक से चलाना हो तो निर्णय की प्रक्रिया सामूहिक रखनी होती है। "लोकतांत्रिक तानाशाह" बनने का श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्रयास किया था। वह प्रजातंत्र के लिए अत्यंत घातक है। किसी भी तरह का निर्णय न करने की डॉ. मनमोहन सिंह की शैली भी प्रजातंत्र के लिए घातक है। अटल बिहारी वाजपेयी की शैली उत्तम कार्यशैली थी। इस कार्यशैली का तू अनुपालन करना।और एक महत्वपूर्ण अंतर को ध्यान में रखना। पहले राजा सार्वभौम हुआ करते थे। राजा से भी बड़ा राजधर्म हुआ करता था। इसलिए धर्मदंड सब में सार्वभौम हुआ करता था। यह धर्मदंड प्रजा के पास होता है। धर्मदंड का प्रतिनिधित्व समाज का निस्वार्थी, त्यागी, तपस्वी, समर्पित समूह का करता है। यह समाज के सभी क्षेत्रों में होता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, साहित्य, साधु-संन्यासी, धर्माचार्य, कलाकार उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके प्रति तू सदा विनम्र रहना। तू जानता ही है कि फलों से लदा वृक्ष झुकता है, विनम्र बन जाता है। सब को देकर वह रिक्त होता है। तू पथ पर चलने वालों की छाया बनना। उन्हें मधुर फल देना, उनकी प्यास बुझाना, उनकी क्षुधा शांत करना।

एक बात ध्यान में रखना कि, हमारा यह भारतवर्ष अत्यंत प्राचीन है। हजारों राजा यहां हुए। उनके नाम भी लोगों के ध्यान में नहीं रहे, लेकिन राजा न बने कृष्ण को लोग सम्राट मानते हैं। राजा राम हरेक के हृदय में हैं। हर्षवर्धन, कृष्णदेव राय, राजा शिवाजी

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023|

जनसाधारण के मन में हैं। क्योंकि ये सभी राजा राज्य के उपभोगशून्य स्वामी थे। तू भी उनकी कतार में जा बैठे ऐसा मुझे हृदय से लगता है। मेरा भारतवर्ष, मेरा आर्यावर्त, मेरा जम्बूद्वीप पहले जैसा ही धर्मभूमि हो, विश्व के सभी मानवों का आश्रयस्थल हो यही मेरी इच्छा है। और मेरी यह इच्छा पूरी हो इसलिए मैं तुम्हें मेरी सभी दिव्य शक्तियों का आशीर्वाद देता हूं।[15]

संदर्भ

1. बाह्वायतं क्षत्रियैर्मानवानां लोकश्रेष्ठं धर्ममासेवमानैः। सर्वे धर्माः सोपधर्मास्त्रयाणां राज्ञो धर्मादिति वेदाच्छृणोमि॥ शा0प0, 63/24
2. यथा राजन् हस्तिपदे पदानि संलीयन्ते सर्वसत्त्वोद्भवानि।एवं धर्मान् राजधर्मेषु सर्वान् सर्वावस्थान् सम्प्रलीनान् निबोध॥ शा0प0, 63/25
3. सर्वेधर्म राजधर्मप्रधानाः सर्वेवर्णाः पाल्यमाना भवन्ति।सर्वत्यागो राजधर्मेषु राजंस्त्यागं चाहुरग्रयं पुराणम्॥ शा0प0, 63/27
4. द्रष्टव्य शान्तिपूर्व अध्याय-64
5. द्रष्टव्य शन्तिपूर्व अध्याय-57
6. उत्थानेनामृतं लब्धमुत्थानेनासुरा हताः।उत्थानेन महेन्द्रेण श्रेष्ठयं प्राप्तं दिवीह च॥ शा0प0, 58/14
7. यद्यप्यस्य विपत्तिः स्यात् रक्षमाणस्य वै प्रजाः।सोऽप्यस्य विपुलो धर्म एवंवृत्ता हि भूमिपाः॥ शा0प0, 58/23
8. उपाध्याय, आचार्य बलदेव, संस्कृत-वाङ्मय का बृहद इतिहास, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, 2000 ई0, पृ0 644-645
9. शान्तिपर्व अध्याय 69/79, 98
10. यं च धर्मं चरिष्यन्ति प्रजा राज्ञा सुरक्षिताः। चतुर्थं तस्य धर्म त्वत्संस्थं वै भविष्यति॥ श0पा0 67/27
11. शान्ति पर्व अध्याय, 90/29-32
12. तस्मात् सर्वगुणैरेतैरूपपन्नाः सुपूजिताः।मन्त्रिणः प्रकृतिज्ञाः स्युस्त्र्यवरा महदीप्सवः॥ शा0प0, 83/47
13. परीक्ष्य च गुणान् नित्यं प्रौढ़भावान् धुरन्धरान्।चोपधाव्यतीताश्च कुर्याद् राजार्थकारिणः॥ शा0प0, 83/22×प
14. शान्तिपूर्व अध्याय, 74/21
15. शान्तिपर्व अध्याय, 85/28-31

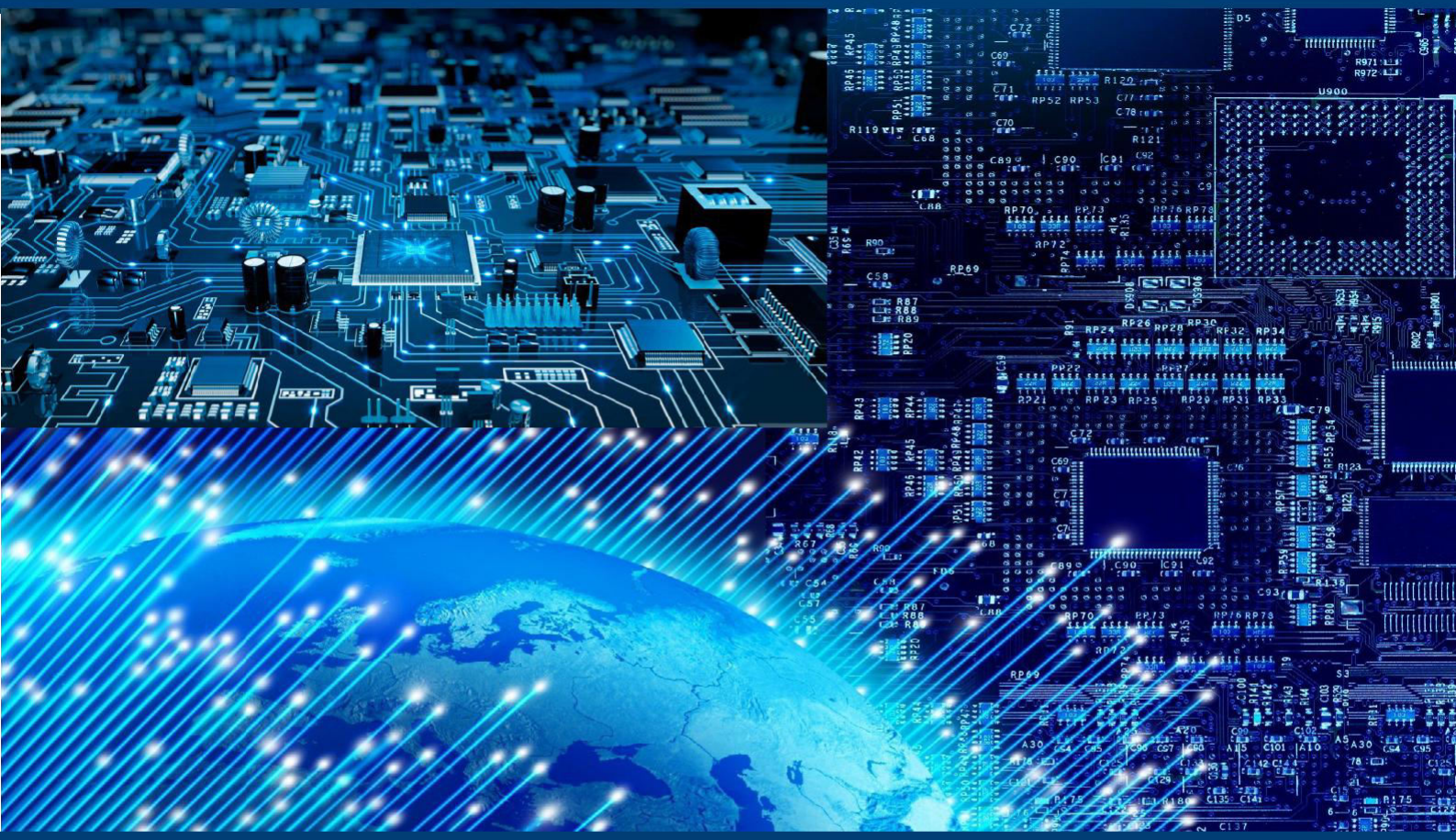

IJARASEM

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com